शबरी

"राम को शबरी के झूठे बेर ऐसेही मीठे नहीं लगे|
पूरी भाव और श्रद्धा से खिलाए तभि ही गहेरे लगे|"

अपने आगमन से ऊन साधू-संतो को दूर देख, पश्चाताप कि आढ में वोह महारानीने गंगा में अपने रुतबे और शान को डुबो दिया| पुनर्जन्म में खुदको एक छोटासा तिनका मांगकर, वोह छोटीसी कन्या अपनी ही शादी में, जानवरों कि हत्या देख, घर छोड़कर भाग गई|

धर्म कि भाषा सिखने, मन कि शांति ढूँढने और अपने आपको पहेचानने वो आर्य नारी, अपनी भरी जवानी में ही भटक भटक कर ऊन पर्वतों कि चोटीमे, रिषिमुख पर्वत पर, एक तेजस्वी आत्मा, एक दिव्य बुजुर्ग "माटंग" को मिली, और अपनी सारी जिंदगी उनकी सेवा में झोंक दी|

अंतिम ज्ञान माँगने पर, ऊस माटंग बुजुर्गने मरते वक्त शबरी को और कुछ नहीं केवल "राम" कि राह देखने को कह दिया और बाकि बची सारी जिंदगी, कुटिया में बिताकर, भगवान के इंतेजार में गुजारने को कह दिया| बस ईसी विश्वास से वोह आर्य नारी, पलकें बिछाए ऊसी दिन से प्रभु के इंतेजार में अपना जीवन बिताने लगी| विश्वास तो अपना ईतना गहेरा बना दिया कि, "एक दिन ऊपरवाले का जरुर दीदार होगा", ऐसा कहकर, ऊस सच को यकीन मान लिया|

Sevak

फिर तो क्या, वक्त ने ऐसा मोड़ लिया, “राम” को भी वनवास काटना पड़ा| घने जंगल में बहुत दूर जाते जाते, लक्ष्मण को किसी दिव्य शक्ति का आभास होने लगा| वहाँ कि हवाओं, पेड़-पौधे, हर एक नजारों में “राम” के गुंजन का सुर सुनाई दिया| लक्ष्मण के अवाक होने से पहेले ही प्रभु ने उनको, वोह महान आर्य नारी का वर्णन करवाया| क्योंकि ऐसी तेजस्वी और विध्यमान साधवी के दीदार को तो उन्हें स्वयं जाना पड़ा|

‘शबरी’ कि ऐसी करुणा और प्यार को देख, प्रभु को भी कुछ पल रोना आया| ‘शबरी’ ने अपने आंसुओसे, प्रभु के चरण कमल को धोके, दोनो का अपनी कुटिया में आदर सत्कार किया| लक्ष्मण तो ऊस बूढी कि निस्वार्थ सेवा से दूर हो गए, जबकि प्रभु राम तो उसकी सेवा, भक्ति और श्रद्धा में डूबते ही चले गए|

अत: कुछ न भी होते हुए, ऊसने बड़ी चाव से अपने झूठे बेर प्रभु को खिलाए| जिनसे लक्ष्मण तो दूर चले गए लेकिन प्रभुने ऊसको बड़ी चाव से खाए| “शबरी” के ईस निस्वार्थ प्रेम में तो वोह डूबते ही चले गए|

बस देर हे तो सिर्फ हमें भी ऊसी “शबरी” के जैसे, श्रद्धा और भाव से सम्पूर्ण शरणागत होने कि, अगर दिल से पुकारेंगे तो आज भी प्रभु अपने झूठे बेर खाने दौड़े चले आयेंगे|

“बस एक बार ऊस कुटिया में अगर जाओगे और
अपने ह्रदय कि आंखोसे, अपनी पलकों को मसलोगे,
तो आज भी तुम्हे वोह ‘शबरी’ इंतेज़ार करती दिखेगी|”

Sevak